



उत्तराखण्ड सामाजिक ज्ञान



विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	प्रागैतिहासिक काल में उत्तराखण्ड	1
2	उत्तराखण्ड का आद्य ऐतिहासिक काल	4
3	उत्तराखण्ड के प्राचीन राजवंश	6
4	उत्तराखण्ड का मध्यकालीन इतिहास	11
5	गढ़वाल में परमार (पंवार) या शाह राजवंश का शासन	15
6	कुमाऊ में चंद शासन	20
7	उत्तराखण्ड (कुमाऊं और गढ़वाल) में गोरखा शासन	27
8	उत्तराखण्ड में ब्रिटिश शासन	31
9	टिहरी राजवंश और टिहरी स्वतंत्रता आंदोलन	35
10	राष्ट्रीय आन्दोलन में उत्तराखण्ड की भूमिका	37
11	उत्तराखण्ड राज्य आंदोलन	41
12	उत्तराखण्ड में विभिन्न लोकप्रिय जन आन्दोलन	47
13	उत्तराखण्ड- अवस्थिति और विस्तार	51
14	उत्तराखण्ड का भौतिक विभाजन	54
15	उत्तराखण्ड के भू-आकृतिक विशेषताएँ	61
16	उत्तराखण्ड का अपवाह तंत्र	68
17	मृदा	80
18	उत्तराखण्ड की प्राकृतिक वनस्पति	82
19	उत्तराखण्ड का वन्यजीवन और संरक्षण	87
20	उत्तराखण्ड की जलवायु	94
21	उत्तराखण्ड में कृषि एवं संबंधित क्षेत्र	98
22	उत्तराखण्ड के खनिज संसाधन	109
23	उत्तराखण्ड में उद्योग	112

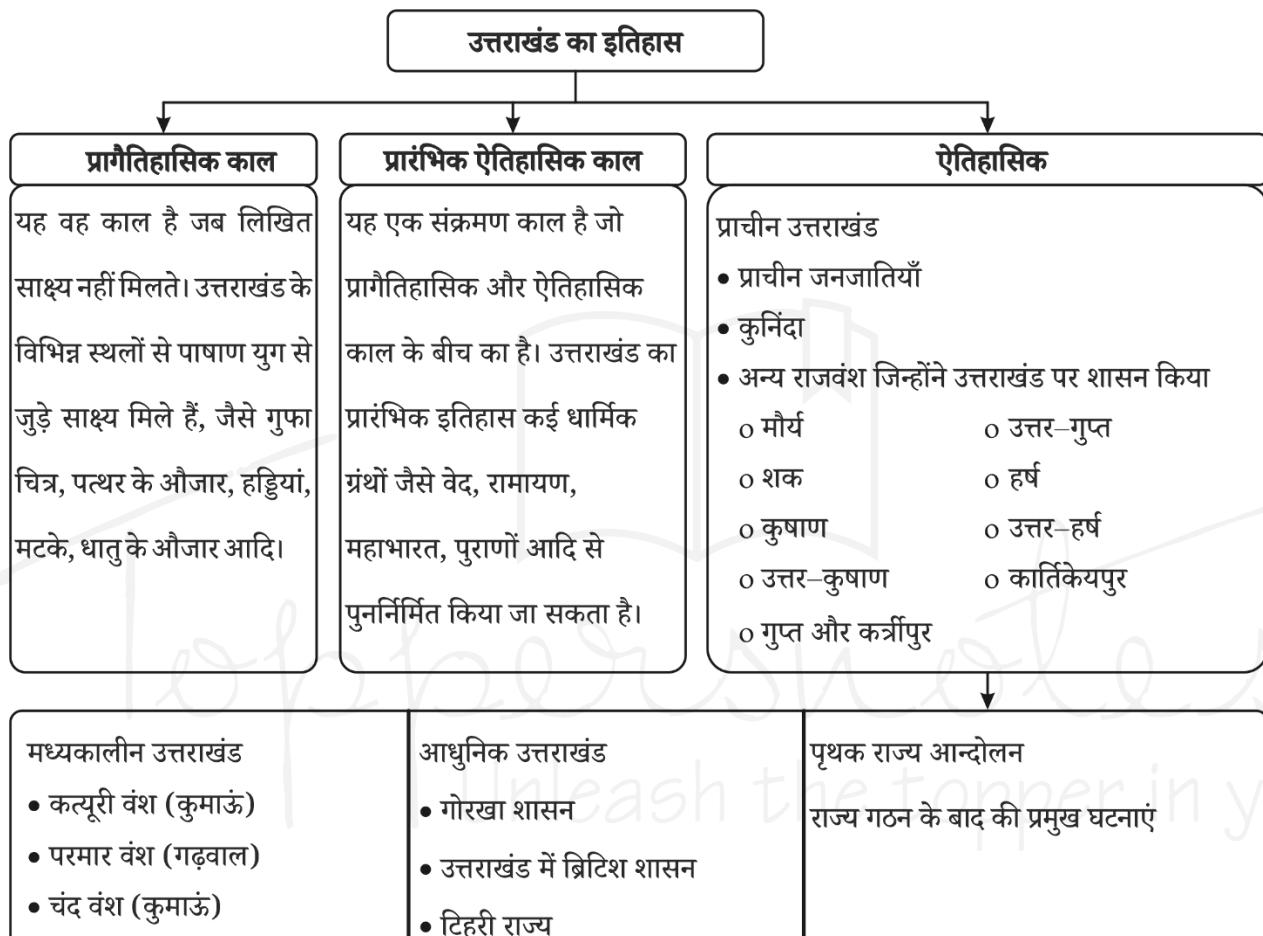
विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	परिवहन एवं संचार	120
25	ऊर्जा और जलविद्युत	128
26	जनसांख्यिकीय प्रोफाइल _ जनसंख्या और जनगणना	134
27	उत्तराखण्ड राजव्यवस्था की आधारभूत सरंचना	140
28	उत्तराखण्डः कार्यपालिका	144
29	उत्तराखण्ड _ विधानमंडल	148
30	उत्तराखण्डः न्यायपालिका	152
31	उत्तराखण्ड में स्थानीय शासन	159
32	उत्तराखण्ड की संवैधानिक संस्थाएँ	169
33	उत्तराखण्ड के गैर-संवैधानिक निकाय	174
34	उत्तराखण्ड के लोकगीत	186
35	उत्तराखण्ड के लोकनृत्य	188
36	उत्तराखण्ड के लोक वाद्य यन्त्र	190
37	उत्तराखण्ड की चित्रकला	191
38	उत्तराखण्ड की शिल्पकला एवं बोलियाँ	193
39	उत्तराखण्ड के प्रमुख मेले एवं त्यौहार	197
40	उत्तराखण्ड में पर्यटन और प्रमुख पर्यटन स्थल	202
❖	विविध	

1 CHAPTER

प्रागैतिहासिक काल में उत्तराखण्ड

पहले यह माना जाता था कि उत्तराखण्ड की पहाड़ी इलाकों और कठोर जलवायु ने इसे प्राचीन काल में रहने योग्य नहीं बनाया। हालांकि, इतिहासकारों और मानव विज्ञानियों के हालिया शोध से इस क्षेत्र के इतिहास के पाषाण युग तक के साक्ष्य मिले हैं। उपकरणों, रॉक शेल्टर्स, गुफा चित्रों, कप के निशानों और दफन स्थलों जैसी खोजें इस क्षेत्र में प्रारंभिक मानवों के जीवन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती हैं। उत्तराखण्ड का इतिहास निम्नलिखित रूप में विभाजित है:



प्रागैतिहासिक काल से जुड़े साक्ष्य को विभिन्न समयावधि में वर्गीकृत किया गया है। प्रमुख समयावधि निम्नलिखित हैं:

1. निम्न पुरापाषाण काल

- ✓ निष्कर्ष: निम्न पुरापाषाण काल के उपकरण और साक्ष्य यहां खोजे गए:
 - कालसी (यमुना नदी तट)।
 - श्रीनगर (अलकनंदा नदी)।
 - खुटानी गधेरा (नैनीताल जिला)।
 - पूर्वी रामगंगा नदी (अल्मोड़ा जिला)।

2. मध्य पुरापाषाण काल

- ✓ निष्कर्ष: श्रीनगर में अलकनंदा नदी के किनारे खोजें की गई हैं।

3. उत्तर पुरापाषाण काल

- ✓ निष्कर्ष: उत्तराखण्ड में आज तक इस काल का कोई साक्ष्य नहीं मिला है।

4. पुरापाषाण काल

- ✓ निष्कर्ष: एम. पी. जोशी द्वारा जासकोट के निकट क्वार्टजाइट से बने औजार खोजे गए।

5. नवपाषाण युग

5.1 कलाकृतियाँ और संरचनाएँ:

- ✓ कप-चिह्न: नक्काशीदार छायें, जो संभवतः अनुष्ठानों या प्रतीकात्मक उद्देश्यों के लिए उपयोग की जाती थीं, विभिन्न साइटों पर पाई गई हैं। जैसे :
 - द्वाराहाट (पांडुखोली), सोमेश्वर, चंद्रेश्वर मंदिर (अल्मोड़ा जिला)।
 - खेखन, जसकोट, देवीधुरा, गोपेश्वर, पश्चिमी नगर नदी।
- ✓ ये कप के निशान उन निशानों के समान हैं जो बुर्जहोम (कश्मीर) में पाए गए थे, जैसा कि एम. पी. जोशी ने उल्लेख किया है।

5.2 अंत्येष्टि :

- ✓ बुर्जहोम के समान दफन संरचनाएँ पाई गई हैं, जो संभावित आवास स्थलों का संकेत देती हैं।

6 मेगालिथिक युग

उत्तराखण्ड में कुछ स्थलों पर मेगालिथिक कप के निशान पाए गए हैं, जिन्हें ओकल के नाम से जाना जाता है, जो मेगालिथिक पाषाण युग (3000–4000 ईसा पूर्व) तक के हैं। यह प्राचीन नक्काशी बड़े पत्थरों पर की गई थी, जो प्रागैतिहासिक काल में इनके व्यापक उपयोग और महत्व को दर्शाती है।

- ✓ सुरेगवाल मुनिया चूड़ा गांव: यह उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जिले के द्वाराहाट ब्लॉक में जलाली-मासी मार्ग के किनारे स्थित है। यह गांव अपनी प्राचीन पुरातात्त्विक खोजों के लिए महत्वपूर्ण है।
- ✓ जॉयू गांव: यहां भी समान कप के निशान पाए जाते हैं। इन्हें उत्तराखण्ड की सबसे पुरानी खोजों में से एक माना जाता है।

6.1 इन महापाषाण-चरण संरचना के संबंध में स्थानीय मान्यताएँ और परंपराएँ-

- ✓ पांडवों से संबंध: स्थानीय लोक कथाएं इन कप के निशानों का निर्माण पांडवों से जोड़ती हैं, जो महाभारत के प्रसिद्ध पात्र हैं।

- ✓ सांस्कृतिक महत्व: ये कप के निशान स्थानीय जनसंख्या द्वारा गहरी श्रद्धा के साथ पूजे जाते हैं और प्राचीन परंपराओं के पवित्र अवशेष माने जाते हैं।
- ✓ धार्मिक प्रथाएँ: प्रागैतिहासिक काल में इन कप के निशानों का उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों, जैसे यज्ञों (बलि अनुष्ठान) में किया जाता था।
- ✓ व्यावहारिक उपयोग: इन संरचनाओं का उपयोग बीजों से तेल निकालने और अनाज की प्रसंस्करण जैसी व्यावहारिक जरूरतों के लिए भी किया जाता था। उनका कार्यात्मक डिजाइन प्रारंभिक मानव सभ्यताओं की बुद्धिमत्ता और संसाधन शीलता को दर्शाता है।

उत्तराखण्ड में पाए जाने वाले शैलाश्रय और गुफा चित्र (जिलावार)।

1. अल्मोड़ा जिला

A. लाखुदियर (लाख की गुफा):

- ✓ यह गुफा अल्मोड़ा से 20 किमी दूर, अल्मोड़ा-जगेश्वर मार्ग पर, सुयल नदी के पास स्थित है। इसे 1968 में डॉ. एम. पी. जोशी ने खोजा था।
- ✓ विशेषताएँ:
 - विभिन्न गतिविधियों में मानव आकृतियाँ, जैसे नृत्य (समूह नृत्य)।
 - जानवरों की आकृतियाँ और ज्यामितीय आकार।
 - काले, लाल और पीले रंगों से चित्रित।
 - लहराती रेखाएँ, आयताकार ज्यामितीय डिजाइन और बिंदुओं के समूह देखे जाते हैं।

B. ल्वेथाप

- ✓ चित्रण: शैलाश्रयों की दीवारों पर शिकार और नृत्य के दृश्य दर्शाएं गए हैं।

C. पेट शाला

- ✓ चित्रण: इस स्थल पर नृत्य करती हुई आकृतियाँ पाई जाती हैं।

D. फल सीमा

- ✓ विशेषताएँ: फल सीमा के चित्रों की एक अनोखी विशेषता यह है कि इन्हें आग से काला कर दिया जाता था और बाद के निवासियों द्वारा जलाया गया।
- ✓ चित्रण: नृत्य और ध्यान करती हुई आकृतियां।

<p>2. चमोली जिला</p> <p>A. गोरख्या उडियार</p> <ul style="list-style-type: none"> ✓ स्थान: अलकनंदा नदी के पास, झंगरी गांव में स्थित। ✓ यह गुफा पाषाण युग (पैलियोलिथिक) से मानी जाती है। ✓ विशेषताएँ: <ul style="list-style-type: none"> ✓ पीली चट्टान की पृष्ठभूमि पर लाल और केसरिया रंग की चित्रकला। ✓ मानव और पशु आकृतियाँ, जिनमें त्रिशूल के आकार वाले मानव भी शामिल हैं। <p>B. किमनी</p> <ul style="list-style-type: none"> ✓ स्थान: किमनी गांव में कर्णप्रयाग-ग्वालदम रोड के किनारे। ✓ विशेषताएँ: इस स्थल से औजारों और जानवरों की हल्की सफेद रंग की आकृतियाँ पाई जाती हैं। <p>C. मलारी</p> <ul style="list-style-type: none"> ✓ स्थान: तिब्बत के पास स्थित 	<p>✓ खोजें:</p> <ul style="list-style-type: none"> ▪ मानव कंकाल, मटके, और पशु हड्डियाँ। ▪ 5.2 किलोग्राम सोने का मुकुट (जो 2000 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व के बीच का माना जाता है)। <p>3. उत्तरकाशी जिला</p> <p>A. हुडली</p> <ul style="list-style-type: none"> ✓ विशेषताएँ: नीले रंग की चट्टान चित्रकला। <p>4. पिथौरागढ़ जिला</p> <p>A. बांकोट</p> <ul style="list-style-type: none"> ✓ विशेषताएँ: आठ तांबे की मानव आकृतियाँ। ✓ उत्तराखण्ड में की गई पुरातात्त्विक और मानव वैज्ञानिक खोजें इस क्षेत्र में प्राचीन मानव जीवन का जीवंत चित्र प्रस्तुत करती हैं, जो निचले पाषाण युग से लेकर नवपाषाण युग और उससे आगे तक फैली हुई हैं। ये खोजें इस क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित करती हैं और इसके प्राचीन निवासियों के जीवन और संस्कृति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती हैं।
---	---

2 CHAPTER

उत्तराखण्ड का आद्य ऐतिहासिक काल

प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक काल के बीच का संक्रमण काल, जिसे प्रारंभिक ऐतिहासिक काल / आद्य ऐतिहासिक काल कहा जाता है, इस काल में, उत्तराखण्ड के महत्वपूर्ण पुरातात्त्विक साक्षयों का अभाव है। यह काल मुख्य रूप से विभिन्न धार्मिक महाकाव्यों में दर्ज है, इसलिए इसे महाकाव्य युग कहा जाता है। उत्तराखण्ड का प्रारंभिक इतिहास वेदों, रामायण, महाभारत और पुराणों जैसे ग्रंथों में मिलते संदर्भों के माध्यम से पुनर्निर्मित किया जाता है।

जानकारी के स्रोत :

1. उत्तराखण्ड के प्रारंभिक ऐतिहासिक काल के बारे में जानकारी के मुख्य स्रोत धार्मिक ग्रंथ हैं, जैसे पुराणों के ग्रंथ।
2. ऋग्वेद में इस क्षेत्र का सबसे पहले उल्लेख किया गया है, जिसमें इसे देवभूमि (देवों की भूमि) और मनीषियों की पूर्ण भूमि (साधुओं की पूर्ण भूमि) के रूप में संदर्भित किया गया है।
3. ऐतरेय ब्राह्मण में उत्तर कुरु शब्द का प्रयोग उत्तराखण्ड के लिए किया गया है।
4. कौशीतकी ब्राह्मण में बद्रिकाश्रम का उल्लेख किया गया है, जिसे वाकदेवी (वाणी की देवी) का निवास स्थान माना गया है।
5. स्कंद पुराण में हिमालय क्षेत्र को पांच भागों में बांटा गया है: नेपाल, केदारखण्ड, मनस्कंड, कश्मीर, और जलंधारा
 - ✓ केदारखण्ड में गढ़वाल शामिल है, जबकि मानसखण्ड में कुमाऊं शामिल है
 - ✓ केदारखण्ड और मनस्कंड के मिलाकर बने क्षेत्र को ब्रह्मापुर, खासदेश, या उत्तराखण्ड कहा जाता है।
6. बौद्ध साहित्य में पाली भाषा में उत्तराखण्ड को हिमवंत कहा गया है।

प्राचीन उत्तराखण्ड के प्रमुख क्षेत्र:

A. गढ़वाल क्षेत्र

1. प्राचीन नाम और सीमाएँ
 - ✓ प्राचीन समय में गढ़वाल को बद्रिकाश्रम, तपोभूमि, और केदारखण्ड के नाम से जाना जाता था।
 - ✓ केदारखण्ड को 50 योजन लंबा और 30 योजन चौड़ा बताया गया है।
 - ✓ केदारखण्ड और मनस्कंड की सीमाएँ बदहन क्षेत्र या नंदा देवी पर्वत द्वारा बांटी गई थीं।
 - केदारखण्ड गंगाद्वार से हिमालय तक और ताम्सा (टोंस) नदी से बुद्धांचल या नंदा देवी तक फैला हुआ था।
 - ✓ लगभग 1515 ई. में अजय पाल ने 52 किलो का एकीकरण किया, और इस क्षेत्र को गढ़वा के नाम से जाना जाने लगा।
2. वैदिक और पौराणिक संदर्भ
 - ✓ ऋग्वेद के अनुसार, असुर राजा शम्बर के इस क्षेत्र में 100 किलो थे, जिन्हें इंद्र और सुदास ने नष्ट कर दिया था।
 - ✓ अलकापुरी, जो कुबेर की राजधानी है, गढ़वाल में स्थित है, और मनु, जो मानवता के पूर्वज थे, यहां रहते थे।
 - ✓ बद्रीनाथ के पास, गणेश, नारद, मचुकुंद, व्यास और स्कंद जैसी गुफाओं को वैदिक रचनाओं के स्थल के रूप में माना जाता है।

3. धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व

- ✓ टिहरी गढ़वाल में, हिमालय के विशाल पर्वत पर वशिष्ठ गुफा और वशिष्ठ कुंड स्थित हैं।
- ✓ देवप्रयाग में रघुनाथ मंदिर है, जहां भगवान राम के बारे में माना जाता है कि उन्होंने ध्यान किया था, और लक्ष्मण ने टिहरी के तपोवन में ध्यान किया था।
- ✓ रामायण काल में, बनासुर ने इस क्षेत्र पर शासन किया था और उसकी राजधानी ज्योतिषपुर (आधुनिक जोशीमठ) थी।
- ✓ महाभारत के वनपर्व में, केदारनाथ को भृगुतंग कहा गया है, और इस क्षेत्र पर पुलिंद और किरात कबीलों का प्रभुत्व था।
- ✓ पुलिंद राजा सुबाहु, जिनकी राजधानी श्रीनगर थी, महाभारत युद्ध में पांडवों के लिए लड़े थे।
- ✓ राजा विराट, जिनकी राजधानी विराटगढ़ (आधुनिक जौनसार) थी, ने अपनी बेटी उत्तरा का विवाह अभिमन्यु से किया था।

4. अध्ययन के केंद्र

- ✓ बद्रिकाश्रम और कण्वाश्रम इस क्षेत्र के प्रमुख अध्ययन केंद्र थे।
- ✓ खसों के शासनकाल में गढ़वाल में बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ।
- ✓ महाभारत में देवप्रयाग को तीर्थ यात्रा का सर्वोत्तम स्थान बताया गया है, जो सभी पापों को नष्ट करने की क्षमता रखता है।
- ✓ महाभारत में श्रीनगर को सुबाहुपुर और श्रीखेत कहा गया है।

कण्वाश्रम के बारे में

- ✓ कण्वाश्रम, जो पौड़ी जिले में मालिनी नदी के किनारे स्थित है, राजा दुष्यंत और शकुंतला की प्रेम कहानी के लिए प्रसिद्ध है।
- ✓ यहाँ पर सम्राट भरत का जन्म हुआ था।
- ✓ महान कवि कालिदास ने यहाँ पर "अभिज्ञान शाकुंतलम" की रचना की थी।
- ✓ आजकल, इस स्थल को चौकीधाट के नाम से जाना जाता है, जहां बसंत पंचमी के दिन मेला लगता है।

B. कुमाऊँ क्षेत्र

1. पौराणिक उत्पत्ति

- ✓ पौराणिक कथाओं के अनुसार, चम्पावत में स्थित काटेश्वर पर्वत भगवान विष्णु के कूर्म (कछुआ) अवतार का स्थल था, जिससे इस क्षेत्र को कूर्माचल नाम मिला, जो बाद में कुमाऊँ में बदल गया।
- ✓ इस क्षेत्र का प्राचीन नाम मनस्कंड या कूर्माचल था।

2. जनजातीय उपस्थिति और मंदिर

- ✓ वायु पुराण में कुमाऊँ में किरात, गांधर्व, किन्नर, यक्ष और नाग जैसी जनजातियों का उल्लेख है।
- ✓ अल्मोड़ा में जाख मंदिर और बिनागा, कालिंगा, पिंगला और वासुकी नाग जैसे नाग मंदिर यह प्रमाणित करते हैं कि इस क्षेत्र में नागों की उपस्थिति थी।
- ✓ सबसे प्रमुख नाग मंदिर, बिनागा या बेरीनाग, पिथौरागढ़ में स्थित है।

3. धार्मिक महत्व

- ✓ मनस्कंड में, जागेश्वर धाम को वह स्थान माना जाता है जहां भगवान शिव ने ध्यान किया था, और कार्तिकेय का जन्म हुआ था।
- ✓ महाभारत के अनुसार, महर्षि धौम्य ने सम्राट युधिष्ठिर को इस क्षेत्र के तीर्थ स्थानों के बारे में बताया था।

3 CHAPTER

उत्तराखण्ड के प्राचीन राजवंश

1000 ईसा पूर्व (कुणिंदों की प्रारंभिक स्थापना) से लेकर 8 वीं शताब्दी ईस्वी (कट्युरी वंश की स्थापना) तक का काल उत्तराखण्ड के इतिहास का प्राचीन काल कहा जा सकता है।

1. कुणिंद राजवंश

a. ऐतिहासिक महत्व :

- ✓ कुणिंद उत्तराखण्ड के सबसे प्राचीन शासक थे, और उनका उल्लेख भारतीय महाकाव्य, महाभारत में किया गया है, विशेष रूप से सभा पर्व, अरण्य पर्व और भीष्म पर्व में।
- ✓ सुबाहु, जो कुणिंदों के महानतम राजाओं में से एक थे, वर्तमान श्रीनगर से जुड़े थे। उनकी राजधानी कालकूट थी।
- ✓ वे 4 वीं शताब्दी ईस्वी तक उत्तराखण्ड पर शासन करते रहे। हमें कुणिंदों का उल्लेख अशोक के कालसी अभिलेख में मिलता है, जहाँ इस क्षेत्र के निवासियों को 'पुल्लिंद' कहा गया है, और क्षेत्र को 'अपारंत' नाम से जाना गया था।
- ✓ विदेशी यात्री टॉलेमी ने भी कुणिंदों का उल्लेख किया है और उन्हें कुणिंदस्य कहा है।

b. ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में कुणिंद के सिक्के :

- ✓ कुणिंदों के सिक्के (300 ईसा पूर्व-200 ईसा पूर्व) महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत हैं और इन्हें निम्न में वर्गीकृत किया गया है:

- (i) अमोघभूति प्रकार: ये सिक्के तांबे और चांदी से बने थे, जिन पर ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि में शिलालेख अंकित थे इन सिक्कों पर अक्सर देवी-देवताओं और हिरण्यों की छवियाँ चित्रित होती थीं। सिक्कों पर ब्राह्मी लिपि में "राजा कुणिंदस्य अमोघभूति महाराजास" लिखा हुआ है।

अमोघभूति इस वंश के सबसे शक्तिशाली राजा थे। उन्होंने 1वीं शताब्दी ईसा पूर्व तक शासन किया। उनकी मृत्यु के बाद, कुणिंदों के अधीन मैदान क्षेत्र पर शक शासकों का अधिकार हो गया। कुमाऊं में 'शक संवत' के अस्तित्व और अनेक सूर्य मन्दिरों से यह सिद्ध होता है कटारमल (अल्मोड़ा) सर्वाधिक प्रसिद्ध है।

(ii) अल्मोड़ा प्रकार: विशेष रूप से कट्यूर घाटी, अल्मोड़ा में पाया जाता है।

(iii) छत्रेश्वर प्रकार: देवता छत्रेश्वर/छत्रेश्वर को समर्पित।

c. प्रशासनिक प्रभाग:

- ✓ कुणिंद राज्य को छह भागों में विभाजित किया गया था: तमस, कुलकुट, तंगन, भारद्वाज, रंककुम, और अमेय (गोविषाण)।
- ✓ कालकूट (कलसी) उनकी प्रारंभिक राजधानी थी।

d. अन्य राजवंशों के साथ संबंध:

- ✓ कुणिंदों का शासन शुंग (187-75 ईसा पूर्व) और कुषाण (1वीं-3 वीं शताब्दी ईस्वी) काल के साथ समकालीन था।

e. कुषाण प्रभाव: कुषाणों ने तराई और शिवालिक के कुछ हिस्सों पर शासन किया, इसे वीरभद्र (ऋषिकेश), मोरध्वज (कोटद्वार), और गोविषाण (काशीपुर) में सिक्कों की खोज से प्रमाणित किया जा सकता है।

इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि उत्तराखण्ड के कुछ हिस्सों में कुणिंदों के शासन के साथ-साथ कई अन्य वंशों का भी समानांतर शासन था।

2. मौर्य साम्राज्य, (324 ई.पू. - 187 ईसा पूर्व)

✓ अशोक का प्रभाव:

- कलसी शिलालेख उत्तराखण्ड में मौर्य साम्राज्य के प्रभाव को दर्शाता है, जो देहरादून और तराई क्षेत्रों के कुछ हिस्सों को शामिल करता है।
- इस शिलालेख में इस क्षेत्र के निवासियों को 'पुलिंद' और क्षेत्र को 'अपारंत' कहा गया है।
- इस काल के दौरान उत्तराखण्ड में बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ।
- मौर्य साम्राज्य द्वारा मैदान क्षेत्रों पर नियंत्रण के बावजूद, कुंदिनों ने पहाड़ी क्षेत्रों पर शासन करना जारी रखा।

3. शक वंश (दूसरी शताब्दी ई.पू.)

- ✓ कुमाऊँ क्षेत्र में, शक काल की प्रथाएं, सूर्य के मूर्तियां और मंदिर इस क्षेत्र में शक जातियों की उपस्थिति को दर्शाती हैं।
- ✓ अल्मोड़ा में कोसी के पास स्थित कटारमल सूर्य मंदिर बहुत प्रसिद्ध माना जाता है ओडिशा के कोणार्क सूर्य मंदिर के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण सूर्य मंदिर।

4. कुषाण राजवंश (पहली ई. - चौथी ई.)

- ✓ शक वंश के बाद, कुषाण शासकों ने उत्तराखण्ड के तराई क्षेत्र पर शासन किया।
- ✓ कुषाण काल के अवशेष वीरभद्र (ऋषिकेश), मोरध्वज (कोटद्वार) और गोविषाण (काशीपुर) क्षेत्रों से पाए गए हैं।
- ✓ कुषाणों के बाद, इस क्षेत्र में कई वंशों की स्थापना हुई, जैसे गोविषाण (काशीपुर), कलसी और लाखमंडल, और कुछ क्षेत्रों पर कुणिंदों का शासन था।

5. उत्तर-कुषाण काल

- ✓ यौधेय राजवंश (3-4 वीं शताब्दी ई.):
 - ये कुषाणों के समकालीन थे।
 - जिन क्षेत्रों पर उनका नियंत्रण था, उनमें कांगड़ा, शिमला, जौनसार-बावर (देहरादून), काला डांडा (पौड़ी गढ़वाल), और सहारनपुर शामिल थे।

- उनके सिक्के जौनसार-भावर (देहरादून), कालन-डांडा (पौड़ी गढ़वाल) में पाए गए हैं।
- यौधेय राजा शीलवर्मन ने अश्वमेध यज्ञ किया और विकासनगर (देहरादून) में 'बदावाला यज्ञ वेदिका' (अग्नि वेदी) का निर्माण किया।
- पूर्व कुणिंद शासक, जब तराई और भावर क्षेत्र कुषाण और यौधेय नियंत्रण में आ गए, तब भी पहाड़ी क्षेत्रों में शासन करते रहे।

6. गुप्त काल और कार्तिपुर साम्राज्य

✓ कार्तिपुर साम्राज्य –

- इस साम्राज्य की स्थापना संभवतः कुणिंदों ने की थी, जिसमें गोविषाण, कलसी, रियासतें थीं। और गुप्त पतन के दौरान लाखमंडल का उदय हुआ।

✓ सीमित साक्ष्य:

- इस वंश के बारे में जानकारी मुख्य रूप से समुद्रगुप्त के इलाहाबाद शिला अभिलेख (जो हरिसेना द्वारा लिखा गया था) और लाखमंडल के टूटी हुई शिला अभिलेख से प्राप्त की जा सकती है। लाखमंडल शिला अभिलेख के अनुसार, इसके आसपास का क्षेत्र गुप्त साम्राज्य का हिस्सा था।
- इलाहाबाद अभिलेख में उल्लेख है कि कर्तिपुर राज्य गुप्त साम्राज्य की उत्तरी सीमा पर स्थित था और वह गुप्तों के अधीन था।
- इस क्षेत्र को कर्तिपुर के रूप में पहचाना जाता है, जिसमें कुमाऊँ, गढ़वाल और रोहिलखण्ड शामिल हैं।

7. गुप्तोत्तर राजवंश

✓ यादव राजवंश (5वीं-7वीं शताब्दी ई.):

- राजधानी: सिंहपुर।
- लाखमंडल अभिलेख में गुप्त काल से लेकर हर्षवर्धन के काल तक 11 शासकों का उल्लेख किया गया है, जिनमें सेन वर्मा सबसे महत्वपूर्ण राजा थे।

- लाखमंडल अभिलेख राजकुमारी ईश्वर से जुड़ा हुआ है (उनके पिता: भास्कर वर्मन; उनके पति: चंद्रगुप्त)।
- यह अभिलेख यह प्रमाणित करता है कि यादवों का उत्तराखण्ड के कुछ हिस्सों, विशेष रूप से यमुना नदी के पास पर शासन था।
- ✓ नाग राजवंश (छठी-सातवीं शताब्दी ई.):
 - मुख्य शासक: स्कंदनाग, विभुनाग, अंशुबनाग, और गणपतिनाग, जो गोपेश्वर, गढ़वाल में त्रिशूल अभिलेख में पाए गए।
 - गणपतिनाग को सबसे शक्तिशाली शासक माना जाता था।
 - नाग शासकों ने कर्तिपुर राज्य को हराया और उत्तराखण्ड के कुछ हिस्सों पर अपना शासन स्थापित किया।
 - वे 600 ईस्वी के बाद मौर्य शासकों द्वारा पराजित हो गए।
- ✓ मौखरी राजवंश (7वीं शताब्दी ई.):
 - नाग वंश को उखाड़ फेंक इस क्षेत्र पर कन्नौज से शासन फैलाया। उनकी राजधानी कान्यकुञ्ज थी, जिसे अब कन्नौज के नाम से जाना जाता है।
 - उनके पहले राजा हरिवर्मा थे और अंतिम राजा ग्रहवर्मा थे, जिसे हर्षवर्धन ने मार डाला।

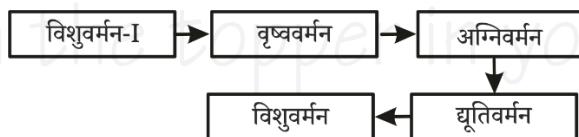
8. हर्ष काल (648–750 ई.)

- ✓ हर्षचरित (बाणभट्ट द्वारा लिखित) में उत्तराखण्ड का उल्लेख है और इस क्षेत्र के यात्रियों के बारे में जानकारी दी गई है।
- ✓ राजनीतिक नियंत्रण: मौखरि वंश के पतन के बाद थानेश्वर के हर्षवर्धन ने इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। उनके समय में गढ़वाल और कुमाऊं के क्षेत्रों को 'ब्रह्मपुर' कहा जाता था।
- ✓ चीनी ग्रंथ:
 - हेन-त्सांग ने सुवर्ण गोत्र नामक एक राज्य का उल्लेख किया है, जिस पर महिलाओं का शासन था (जिसे स्त्री-राज्य कहा जाता है)।

- अपनी यात्रा वृत्तांत सी-यू-की में, हेन त्सांग ने उत्तराखण्ड के कई स्थानों का उल्लेख किया और उन्हें निम्नलिखित नामों से संदर्भित किया-
 - ☞ हरिद्वार को "मो-यो-लो" के रूप में संदर्भित किया
 - ☞ काशीपुर (गोविष्णा) को "की-यू-पी-स्वांग-ना" के रूप में संदर्भित किया।
 - ☞ ब्राह्मपुर को "पो-लो-की-मो-पो-लो" के रूप में संदर्भित किया।
 - ☞ स्वर्ण गोत्र राज्य को "सो-फा-ला-ना-की-लो" के रूप में संदर्भित किया।

9. हृषोत्तर काल (750 ई.)

- ✓ 7वीं से 8वीं शताब्दी के दौरान उत्तराखण्ड क्षेत्र में एक बहु-वंशीय अराजकता का वातावरण था। इस अवधि में कई राज्यों का उदय हुआ, जिन्होंने इस क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों पर शासन किया, जैसे कि ब्राह्मपुर, शत्रुघ्न, गोविष्णा (पौरवों द्वारा शासित) आदि।
- ✓ शत्रुघ्न राज्य:
 - सीमाएँ: गंगा (पूरब में), हिमालय (उत्तर में), यमुना (केंद्र में बहती हुई)
- ✓ पौरव वंश:



हेन त्सांग के अनुसार, यह राजवंश ब्रह्मपुर जिले में अस्तित्व में था, जो पश्चिम में गंगा से लेकर पूर्व में करनाली तक फैला था, और उत्तर में सुवर्णगोत्र से घिरा था।

(i) पौरव वंश का प्रशासन-

प्रशासनिक संरचना पर गुप्त और हर्ष काल की प्रणालियों का महत्वपूर्ण प्रभाव था। शासन केंद्रीकृत था, जिसमें सभी शक्तियाँ राजा के हाथों में एकत्रित थीं, जिन्हें एक क्रमबद्ध प्रशासनिक ढांचे द्वारा सहायता प्राप्त थीं।

<ul style="list-style-type: none"> ✓ सर्वोच्च प्राधिकारी: राजा <ul style="list-style-type: none"> ▪ राजा के पास विधायी, कार्यकारी और न्यायिक शक्तियाँ थीं, जिससे वह शासन में सर्वोच्च अधिकार रखते थे। ▪ वह अत्याचारी नहीं थे; बल्कि, उन्होंने स्वयं को "गायों और ब्राह्मणों का संरक्षक" कहा, जो उनके दयालु और धर्म का पालन करने को दर्शाता है। ▪ प्रशासनिक कार्यों को संभालने के लिए, राजा एक मंत्रिपरिषद पर निर्भर था, जिसमें हर मंत्री किसी विशेष क्षेत्र का प्रबंधन करता था। ✓ प्रमुख प्रशासनिक पद <ol style="list-style-type: none"> 1. कुमार अमात्य: उत्तराधिकारी या युवराज। 2. अमात्य: सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी जो सभी महत्वपूर्ण कार्यों की देखरेख करता था। 3. बालाध्यक्ष: सेना का प्रमुख, जो सैन्य बलों पर सर्वोच्च नियंत्रण रखता था। 4. सेना को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया गया था: <ol style="list-style-type: none"> i. घुड़सवार सेना (अश्वपति के अधीन) ii. हाथी सेना (गजपति के अधीन) iii. पैदल सेना (जयपति के अधीन) 5. कोटाधिकारी: राजमहल (राजप्रसाद) के देखरेख और प्रबंधन का अधिकारी। 6. प्रतिहार: राजा और राजपरिवार की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार अधिकारी। 7. सुपकर्पति: शाही रसोई का प्रभारी अधिकारी। 8. दंडपाशिक: पुलिस का सर्वोच्च अधिकारी, जो कानून और व्यवस्था बनाए रखता था। 9. संधि-विग्रह: युद्ध को टालने और कूटनीति के माध्यम से शांति बनाए रखने के लिए जिम्मेदार अधिकारी। 10. द्वेवारिक: राजमहल में व्यक्तियों के प्रवेश और निकासी की निगरानी करने वाला अधिकारी। (ii) राजस्व प्रणाली: <ul style="list-style-type: none"> ✓ भू-राजस्व (भाग) <ul style="list-style-type: none"> ▪ राज्य की मुख्य आय का स्रोत भूमि कर था, जो कृषि उत्पादन का 1/6 हिस्सा होता था। 	<ul style="list-style-type: none"> ▪ राजस्व संग्रहण की देखरेख भागे नामक अधिकारियों द्वारा की जाती थी। ▪ भूमि को निम्नलिखित श्रेणियों में बांटा गया था: <ul style="list-style-type: none"> ◦ केदार भूमि: सिंचित भूमि। ◦ सरी भूमि: असिंचित भूमि। ✓ अतिरिक्त राजस्व स्रोत <ul style="list-style-type: none"> ▪ वन संसाधन, खनिज निष्कर्षण, व्यापार, जिसमें वनस्पति और अन्य सामग्री शामिल हैं। ✓ लेखांकन एवं अभिलेख संधारण <ul style="list-style-type: none"> ▪ कायस्थ आय और भूमि खाता का रिकॉर्ड रखते थे। ▪ भूमि मापने के लिए द्रोणवापम, खरिवापम, और कुल्यवापम जैसे तरीके अपनाए जाते थे। ✓ गोविष्ण राज्य <ul style="list-style-type: none"> ▪ यह तराई क्षेत्र में स्थित था, जो रामगंगा (पश्चिम) से लेकर शारदा (पूर्व) तक फैला हुआ था, और वर्तमान में यह क्षेत्र काशीपुर के नाम से जाना जाता है। ▪ प्रसिद्ध चीनी तीर्थयात्री हेन त्सांग ने 7वीं शताब्दी में शहर की यात्रा की थी। <h2>10. कृतिकेयपुर वंश</h2> <ul style="list-style-type: none"> ✓ ब्रह्मपुर साम्राज्य के विघटन के बाद कार्तिकेयपुर राजवंश का उदय हुआ, जिसके कारण क्षेत्र में कई छोटी रियासतों का उदय हुआ। ✓ लगभग 700 ई. में कुणिंदों के वंशजों ने उत्तर-पश्चिम गढ़वाल में अपनी शक्ति मजबूत की और कार्तिकेयपुर राजवंश की स्थापना की। ✓ इस राजवंश की स्थापना 700 ई. में बसंत देव (हर्ष की मृत्यु के बाद) ने की, उन्होंने 'परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर' की उपाधि धारण की। ✓ इस वंश की राजधानी : <ul style="list-style-type: none"> ▪ पहले 300 वर्षों तक- कृतिकेयपुर, जो जोशीमठ के दक्षिण में स्थित था। ▪ बाद में स्थानांतरित: बैजनाथ, जो कत्यूर घाटी (वर्तमान में बागेश्वर) में स्थित था। कार्तिकेयपुर राजवंश को मध्य हिमालय के पहले ऐतिहासिक साम्राज्य के रूप में मान्यता प्राप्त है।
--	---

- ✓ सूचना के स्रोत: कृतिकेयपुर वंश का अध्ययन करने के लिए पाण्डुकेश्वर ताम्र लेख महत्वपूर्ण स्रोत हैं, इसके अलावा बागेश्वर, कंदारा और बैजनाथ में अन्य ताम्र लेख भी मिले हैं।
 - ✓ कृतिकेयपुर राज्य के सभी प्रमुख वंशों में से तीन वंशों को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है।
- (i) खरपरदेव: राजा खरपरदेव द्वारा स्थापित।
- ✓ कश्मीरी ऐतिहासिक ग्रंथ कल्हण का राजतरंगिणी में यह उल्लेख मिलता है कि इस अवधि में कश्मीरी शासक ललितादित्य मुक्तपीड़ ने गढ़वाल क्षेत्र पर आक्रमण किया था।
 - ✓ बागेश्वर शिलालेख इस राजवंश के बारे में विवरण प्रदान करता है, जिसमें त्रिभुवन राज को इसका अंतिम शासक बताया गया है।
- (ii) निम्बरदेव: निम्बर द्वारा स्थापित, जिसका उल्लेख नालंदा शिलालेख में मिलता है
- ✓ उनके शासनकाल में, गढ़वाल पर धर्मपाल (बंगाल के पाल वंश का शासक) ने आक्रमण किया था।
 - ✓ निम्बर ने शैव परंपरा का पालन किया और उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र इश्तगन बना।
 - ✓ इश्तगन देव: उन्हें कृतिकेयपुर राज्य को एकजुट करने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने अपनी पत्नी वगा देवी के साथ जागेश्वर में कई मंदिरों का निर्माण किया, जैसे नवदुर्गा, लकुलीश और नटराज।
 - ✓ ललितशुर देव: इश्तगन देव के पुत्र, जिन्होंने लगभग 832 ई. में राजा के रूप में शासन करना शुरू किया। उनके 21वें और 22वें शासनकाल के पाण्डुकेश्वर ताम्र लेखों में उल्लेखित किया गया है। उन्हें, उनके भूमि सुधारों के कारण वराह अवतार के रूप में पूजा गया। उनकी दो पत्नियां थीं - लया देवी और सामा देवी। सामा देवी ने बैजनाथ में नारायण मंदिर का निर्माण किया।
 - ✓ भूदेव: ललितशुर देव के पुत्र, जिन्होंने बैजनाथ मंदिर का निर्माण किया और बौद्ध धर्म का विरोध किया, जिसके कारण उन्हें बुद्धश्रमण शत्रु (बौद्ध भिक्षुओं के शत्रु) की उपाधि प्राप्त हुई।

- (iii) सलोनादित्य राजवंश: इच्छर देव द्वारा स्थापित
- ✓ इच्छर देव की पत्नी सिन्धु देवी थीं। उनके उत्तराधिकारी में देशत देव और पद्म देव शामिल थे।
 - ✓ इस वंश के अंतिम शासक सुभिक्षराज देव थे। उन्होंने कृतिकेयपुर क्षेत्र के भीतर सुभिक्षपुर नामक एक नई राजधानी स्थापित की।

नोट: आदि शंकराचार्य ने कार्तिकेयपुर शासन के दौरान उत्तराखण्ड का दौरा किया था। उनकी यात्रा के दौरान इश्तगन देव शासक थे। शंकराचार्य ने उत्तराखण्ड में बद्रीनाथ और केदारनाथ मंदिरों का सुधार करवाया। उन्होंने पूरे भारत में 4 मठों की स्थापना की (जिनमें से एक उत्तराखण्ड में है)

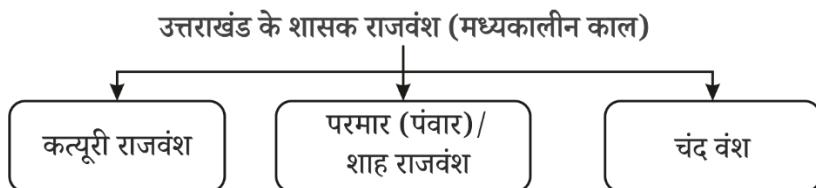
- 1) ज्योतिर्मठ (बद्रिकाश्रम) - उत्तराखण्ड
 - 2) श्रृंगेरी मठ - कर्नाटक
 - 3) द्वारका मठ - गुजरात
 - 4) पुरी गोवर्धन मठ - ओडिशा
- उनकी मृत्यु 32 वर्ष की आयु में 820 ई. में केदारनाथ में हुई कार्तिकेयपुर राजवंश के पतन के बाद कुमाऊँ क्षेत्र में कत्यूरी राजवंश का उदय हुआ। वे कार्तिकेयपुर राजवंश के वंशज माने जाते थे और कत्यूर घाटी (अल्मोड़ा) में बैजनाथ से शासन करते थे।



4 CHAPTER

उत्तराखण्ड का मध्यकालीन इतिहास

मध्यकालीन काल में, उत्तराखण्ड पर कई वंशों का शासन था, जिनमें से कुछ प्रमुख वंश थे



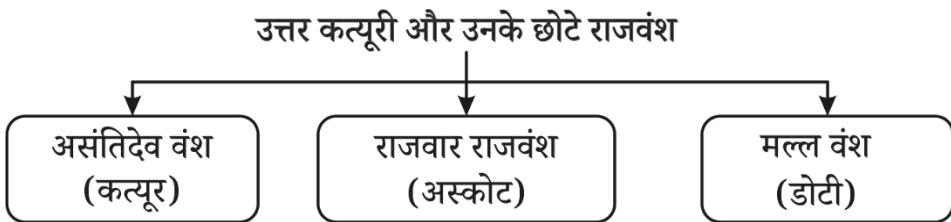
A. कत्यूरी राजवंश

- I. वे कार्तिकेयपुर के वंशज थे, जिन्होंने बैजनाथ में अपनी राजधानी के साथ कत्यूर घाटी में अपना शासन स्थापित किया और कार्तिकेयपुर के पतन के बाद कुमाऊँ में एक प्रमुख शक्ति बन गए।
- II. संस्थापक: बसंतदेव, जिन्हें स्थानीय लोक कथाओं में वासुदेव भी कहा जाता है, हालांकि इतिहासकार इस पर विभाजित है, क्योंकि कुछ का मानना है कि बसंतदेव और वासुदेव अलग-अलग हैं।
- III. ऐतिहासिक जानकारी के स्रोत: पांडुकेश्वर, कृतिकेयपुर, बागेश्वर, बैजनाथ-गणनाथ और कुलसारी में मिले ताम्रलेख, साथ ही कुमाऊँनी लोक गीतों और कहानियों से ऐतिहासिक जानकारी मिलती है।

कार्तिकेयपुर-कत्यूरी राजवंश के शासकों की सूची

1. वासुदेव (700–849 ई.) (विवादित)
2. बसंतना देव (850–870 ई.) (वास्तविक संस्थापक)
3. खर्पर देव (870–880 ई.)
4. अभिराज देव (880–890 ई.)
5. त्रिभुवनराज देव (890–900 ई.)
6. निम्बर देव (900–915 ई.)
7. इस्तानगाना देव (915–930 ई.)
8. ललितसुर देव (930–955 ई.)
9. भू देव (955–970 ई.)
10. सालोनादित्य (970–985 ई.)
11. इच्छाता देव (985–1000 ई.)
12. देशत देव (1000–1015 ई.)
13. पद्म देव (1015–1045 ई.)
14. सुभिक्षराज देव (1045–1060 ई.): बैजनाथ के पास सुभिक्षपुर की स्थापना की।
15. धाम देव (1060–1064 ई.)
16. बीर देव (1065 ई. के पहले बहुत कम समय तक शासन किया)

बाद में कत्यूरी कई छोटे राजवंशों में विघटित हो गए जैसे:



(i) असंतिदेव वंश : असंति देव को इस वंश का संस्थापक माना जाता है।

- ✓ प्रीतम देव/पृथ्वीपाल इस वंश के शासक थे। उनकी पत्नी जीयारानी, जिनका असली नाम मोल देवी पुंडीर था, को कुमाऊं की लक्ष्मीबाई के नाम से जाना जाता है।
- ✓ ब्रह्म देव (पृथ्वीपाल और जीयारानी के पुत्र) को तैमूर लंग ने मारा था, जिन्होंने हरिद्वार पर आक्रमण किया था। यह बात तैमूर लंग की जीवनी तुजुक-ए-तिमुरी में लिखी गई है। बाद में तैमूर और जीयारानी ने रणीबाग की लड़ाई लड़ी, जिसमें जीयारानी की जीत हुई।
- ✓ हर साल रणीबाग में स्थित जीयारानी गुफा में जीयारानी मेला आयोजित किया जाता है।

(ii) अस्कोट का राजवार वंश : यह वंश पिथौरागढ़ में स्थित था और कत्यूरी राजाओं की एक शाखा द्वारा स्थापित किया गया था, जिसका नेतृत्व अभ्य पाल देव ने किया, जो कत्यूरी राजा ब्रह्मदेव के पोते थे।

(iii) डोटी का मल्ल वंश : निरंजन मल्ल देव ने कत्यूरी वंश के पतन के बाद डोटी राज्य की स्थापना की।

B. कत्यूरी राजवंश का पतन :

- समय के साथ, राजवंश कमजोर और खंडित हो गया और कत्यूर के असंतिदेव, अस्कोट के रजवारों और डोटी के मल्लों जैसे परिवारों ने स्थानीय शासन स्थापित किया।
- 1191 ई. में, पश्चिमी नेपाल के अशोकचाल (नेपाल के राजा) ने आक्रमण किया और कत्यूरी वंश से कुमाऊं के प्रमुख क्षेत्रों को कब्जे में ले लिया।
- बाद में, गढ़वाल के पंवार (परमार) और कुमाऊं के चंद वंशों द्वारा स्थिरता फिर से स्थापित की गई।

C. कत्यूरी वंश की सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था

1. समाज

1.1 जाति व्यवस्था:

- ✓ समाज पदानुक्रमित था, जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय और शूद्र प्रमुख जातियाँ थीं।
- ✓ ब्राह्मणों को उच्चतम दर्जा प्राप्त था और वे शासकों से विशेष संरक्षण और सम्मान प्राप्त करते थे।
- ✓ प्राचीन जातियाँ जैसे कोले, किरात, खस और अम्बास्ट भी समाज में मौजूद थीं।

2. धर्म

2.1 धार्मिक विश्वास:

- ✓ कत्यूरी शासक मुख्य रूप से शैव पंथ का पालन करते थे, लेकिन उन्होंने वैष्णव पंथ को भी संरक्षण दिया, जो उनके धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाता है। वे नन्दा देवी की पूजा भी करते थे।
- ✓ इस अवधि के दौरान बौद्ध धर्म प्रचलित था, जो वंश की समावेशी दृष्टिकोण को और अधिक उजागर करता है।

2.2 पारिवारिक देवता:

- ✓ कार्तिकेय कुल देवता थे और जिया रानी कत्यूरी शासकों की कुलदेवी थीं

2.3 मंदिर निर्माण:

- ✓ निम्बर देव: जागेश्वर धाम के मंदिरों का निर्माण किया।
- ✓ इष्टगदेव: जागेश्वर में लकुलीश और नटराज मंदिरों का निर्माण किया।
- ✓ ललित सुर देव: प्रसिद्ध बैजनाथ मंदिर का निर्माण किया।

3. प्रशासन

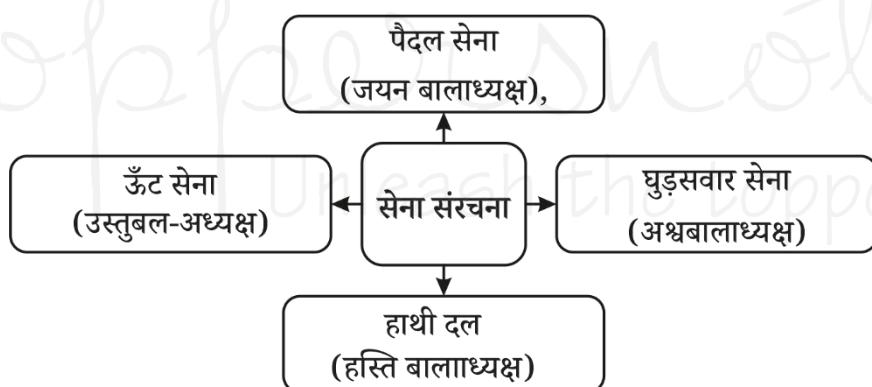
3.1 केंद्रीकृत प्राधिकरण:

- ✓ राजा सर्वोच्च प्राधिकारी था, जिसके पास विधायी, कार्यकारी और न्यायिक शक्तियाँ थीं। शासन में ब्राह्मणों और बुद्धिजीवियों को संरक्षण दिया जाता था और उनसे परामर्श लिया जाता था

3.2 मंत्री परिषद: प्रमुख अधिकारी निम्नलिखित थे:

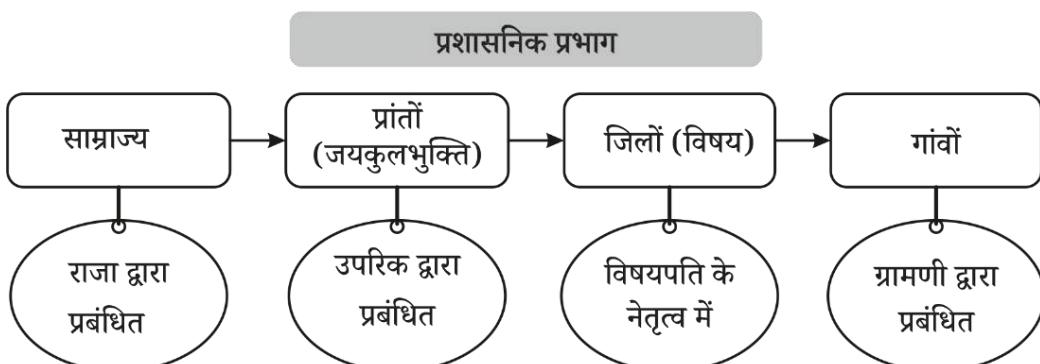
- ✓ कुमार अमात्य: उत्तराधिकारी (क्राउन प्रिंस)
 - अमात्य: मुख्य प्रशासक
 - महामाधि-विग्रह: युद्ध और शांति प्रयासों का प्रबंधन करते थे
 - महादंडनायक: पुलिस प्रमुख
 - प्रांतपाल: सीमा क्षेत्रों की सुरक्षा करते थे
 - दुःसाध्य-साधनिक: खुफिया विभाग के प्रमुख
 - महाबलाधिकृत : सेना के सर्वोच्च अधिकारी

3.3 सेना संरचना:



- ✓ महाबलाध्यक्ष समग्र सैन्य प्रमुख होता था।

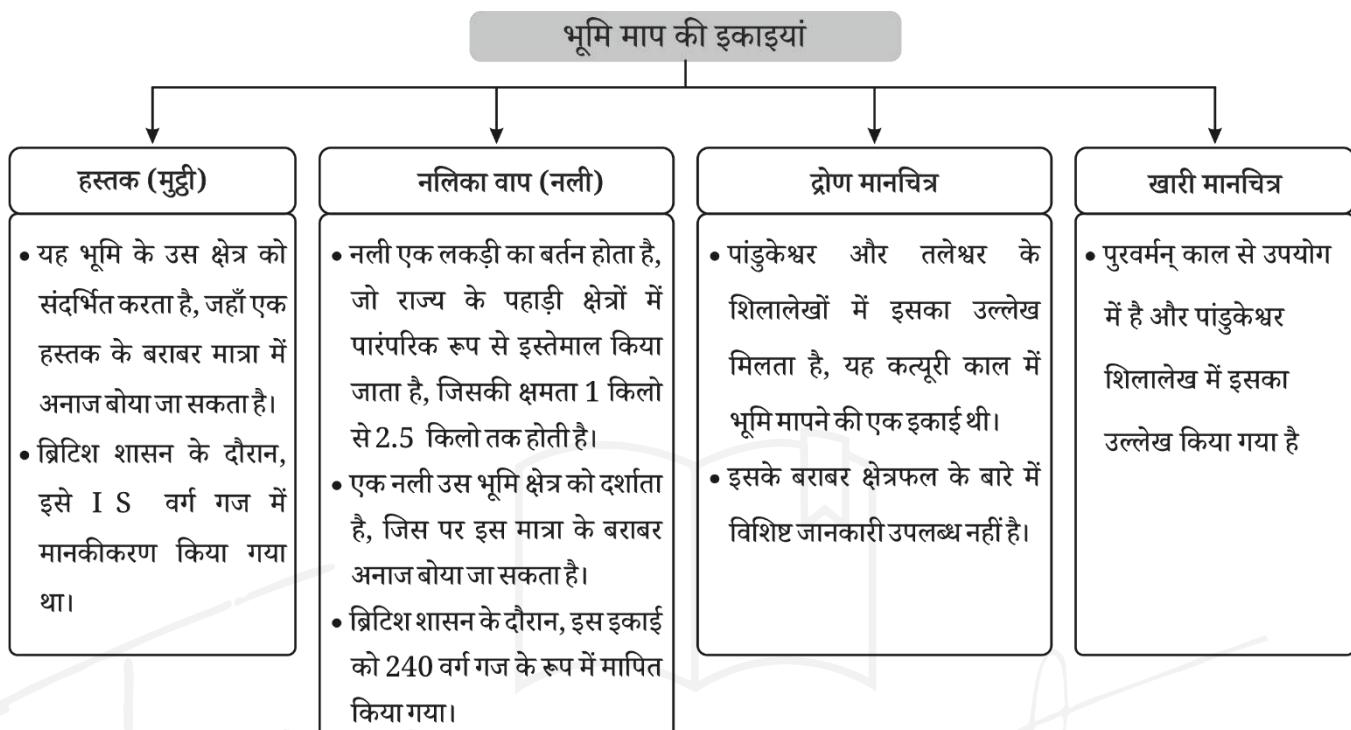
3.4 प्रशासनिक प्रभाग:



4. राजस्व प्रणाली

- 4.1 भूमि राजस्व: आय का मुख्य स्रोत भूमि राजस्व था, जिसे भोग कहा जाता था। इसे शैलकीक नामक अधिकारियों द्वारा एकत्र किया जाता था, और भूमि की माप परमावतार द्वारा की जाती थी, जिसके लिए नालिवापम पद्धति का उपयोग किया जाता था।
- 4.2 अतिरिक्त राजस्व स्रोत: व्यापार से लाभ, विशेष रूप से भोटान्टिक वाणिज्य, वन संसाधनों और खनिजों के दोहन से अतिरिक्त राजस्व उत्पन्न होता था।

5. भूमि माप की इकाइयां



6. कला और वास्तुकला

6.1 कलात्मक योगदान:

- ✓ कत्यूरी वंश अपनी समृद्ध वास्तुकला धरोहर के लिए प्रसिद्ध है।
- ✓ मंदिरों का निर्माण नागर शैली में किया गया था, जिसमें लकड़ी और पत्थर का उपयोग किया गया। ये संरचना मध्यम से छोटी ऊंचाई की थी।
- ✓ सजावटी विशेषताएँ: दरवाजे और दीवारों पर गंगा-यमुना, मनुष्य, पक्षी, जानवर, पेड़-पौधे, लताओं और युद्ध दृश्यों के उकेरे गए चित्र थे।
- ✓ महत्वपूर्ण मंदिर: लाखामंडल, जोशीमठ, जागेश्वर, और बैजनाथ।

6.2 मूर्तिकला कला:

- ✓ औजार और मूर्तियां सफेद, हरे और लाल पत्थरों से बनाई जाती थीं।
- ✓ उल्लेखनीय उदाहरण: द्वाराहाट में पाई गई हर-गौरी की मूर्ति, जिसे राहुल सांकृत्यायन ने भारत में सबसे बड़ी अखंडमूर्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया।
- ✓ बैजनाथ मंदिरों में हरे पत्थर की मूर्तियां प्रमुख रूप से पाई जाती हैं।